फलित ज्योतिष की प्रायोगिक जांच

जयंत वी. नार्लिकर, सुधाकर कुन्ते, नरेन्द्र डाभोलकर और प्रकाश घाटपांडे

महाराष्ट्र में पिछले दिनों जन्म कुंडली के आधार पर भविष्यवाणी को लेकर एक परीक्षण किया गया। यहां इसी परीक्षण का विवरण दिया गया है। इसके लिए 100 मेधावी छात्रों (समूह क) और 100 बौद्धिक रूप से पिछड़े छात्रों (समूह ख) के जन्म से सम्बंधित विवरण इकट्ठे किए गए थे। इन विवरणों के आधार पर इन छात्रों की जन्म कुंडलियां बनाई गईं। दोनों समूहों की कुंडलियों को आपस में बेतरतीब (Random) तरीके से मिला दिया गया ताकि यह पता न चले कि कौन-सी कुंडली किस समूह के छात्र की है।

किसी विषय को विज्ञान के रूप में मान्यता पाने के लिए कुछ न्यूनतम शर्तें पूरी करनी होती है - वह विषय स्पष्ट रूप से परिभाषित धारणाओं पर आधारित हो जो इस विषय के लिए विशिष्ट हों। दूसरे, इन धारणाओं के निष्कर्षों की सत्यता/असत्यता को परीक्षणों द्वारा जांचा जा सके और ऐसे परीक्षण उपलब्ध हों जिनसे यह पता लगाया जा सके कि ये निष्कर्ष सही हैं या गलत।

इसके बाद ज्योतिषियों को इन कुंडलियों के आधार पर भविष्यवाणी करने के लिए आमंत्रित किया गया। कुल 51 ज्योतिषियों ने इसमें भाग लिया। हर ज्योतिषी को 40 कुंडलियां बेतरतीब ढंग से भेजी गईं और यह पहचानने के लिए कहा गया कि कौन-सी कुंडली किस समूह की हो सकती है। 51 सहभागियों में से 27 ने अपने जवाब भेजे। इन जवाबों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने आया कि सिक्का उछाल कर चित या पट की भविष्यवाणी करने पर सही उत्तर आने की जो संभाविता होती है उससे कुछ कम ही इनकी सफलता की दर रही। एक ज्योतिष संस्थान के प्रतिनिधि को सभी 200 जन्म-पत्रिकाएं दी गई थीं। उनकी सफलता दर भी उतनी ही रही जितनी ज्योतिषियों की थी।

इस सीमित किंतु स्पष्ट प्रयोग से यह तो निःसंदेह पता चलता है कि फलित ज्योतिष द्वारा किसी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। आगे प्रयोग करने के लिए यहां कुछ तरीकों की चर्चा भी की गई है।

आम लोगों में यह भ्रम होता है कि फलित ज्योतिष (Astrology) और खगोल शास्त्र (Astronomy) एक ही चीज़ है। चूंकि दोनों में तारों, तारामंडलों, ग्रहों, सूर्य और चंद्रमा की बात की जाती है, इसलिए यह मान लिया जाता है कि दोनों एक ऐसे विज्ञान की शाखाएं हैं जिसका सम्बंध ब्रह्मांड से है। इसका एक उदाहरण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 2001 में की गई वह घोषणा है जिसमें यह कहा गया था कि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में 'वैदिक फलित ज्योतिष' को एक विषय के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है। क्या फलित ज्योतिष एक विज्ञान है?

यदि गहराई से परीक्षण किया जाए तो इस प्रश्न का उत्तर 'नहीं' होगा। किसी विषय को विज्ञान की एक शाखा के रूप में मान्यता पाने के लिए कुछ न्यूनतम शर्तें पूरी करनी होती है। सबसे पहली बात यह है कि वह विषय स्पष्ट रूप से परिभाषित धारणाओं (Postulates or Assumption) पर आधारित हो और जो इस विषय के लिए विशिष्ट हों। दूसरे, इन धारणाओं के निष्कर्षों की सत्यता/असत्यता को परीक्षणों द्वारा जांचा जा सके और जो इस पर निर्भर न हों कि निष्कर्ष किसने निकाले हैं। अंत में, ऐसे परीक्षण उपलब्ध हों जिनसे यह पता लगाया जा सके कि ये निष्कर्ष सही हैं या गलत।

जब-जब फलित ज्योतिष को इन कसौटियों पर परखा गया तब-तब वह खरा नहीं उतरा। इस विषय की आधारभूत मान्यताओं में काफी विभिन्नता पाई जाती है।

जैसे जन्मकुंडली बनाने की विधि को ही लें। दो ज्योतिषी प्रायः एक ही जन्मकुंडली के आधार पर अलग-अलग भविष्यवाणियां करते हैं। इसके अलावा, भविष्यवाणियां प्रायः अस्पष्ट होती हैं और उन्हें गलत सिद्ध नहीं किया जा सकता।

इसके बावजूद पश्चिम में ऐसी ज्योतिष भविष्यवाणियों के परीक्षण किए गए हैं। इसके दो उदाहरण देखिए।

पहला उदाहरण उस मान्यता से सम्बंधित है जो भारत में बहुत अधिक प्रचलित है। यह कहा जाता है कि यदि वर और वधू की जन्म कुंडलियां आपस में मेल न खाती हों तो उन्हें शादी नहीं करनी चाहिए। मिशिगन स्टेट युनिवर्सिटी के एक स्नातक विद्यार्थी बर्नी सिल्वरमन ने अपने पीएच.डी. शोध के लिए यह विषय चुना था। उसने 3456 दंपतियों के साथ यह परीक्षण किया। इनमें से 2978 दंपति ऐसे थे जो सफल वैवाहिक जीवन बिता रहे थे (समूह क) और 478 ऐसे थे (समूह ख) जो या तो तलाक ले चुके थे या अलग-अलग रह रहे थे। इन सब की जन्म कुंडलियां बनाई गईं। इन कुंडलियों को दो ज्योतिषियों को दिया गया और उनसे यह कहा गया कि वे आपसी विचार-विमर्श से यह तय कर लें कि हर दंपति की कुंडलियां मेल खा रही हैं या नहीं। उन्हें यह नहीं बताया गया था कि कौन-सी कुंडली किस समूह के दंपति की थी। इन ज्योतिषियों ने पूर्व निर्धारित मानदंडों के आधार पर कुंडलियों का अध्ययन किया। फिर उनके द्वारा किए गए वर्गीकरण की तुलना सांख्यिकीय विधि से, वास्तविक परिस्थिति से की गई। यह पाया गया कि ज्योतिषियों द्वारा किए गए वर्गीकरण और वास्तविक वर्गीकरण में कोई उल्लेखनीय समानता नहीं थी।

दूसरा उदाहरण कार्लसन द्वारा किए गए परीक्षण का है। इसमें डबल ब्लाइंड विधि का उपयोग किया गया। डबल ब्लाइंड का अर्थ होता है कि प्रयोग करने वाले और प्रयोग के सहभागियों, दोनों को नहीं मालूम होता कि कौन-से आंकड़े किस व्यक्ति से मेल खाते हैं। इस बात का खुलासा विश्लेषण के अंतिम चरण में ही होता है। इस प्रयोग में इस बात का परीक्षण किया गया था कि क्या किसी व्यक्ति के जन्म के समय 'ग्रहों' की स्थिति (ज्योतिष की मान्यता के अनुसार) से उस व्यक्ति के व्यक्तित्व, स्वभाव और व्यवहार का निर्धारण होता है, और क्या इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उस व्यक्ति के जीवन में कौन-सी प्रमुख घटनाएं होंगी।

इस परीक्षण के लिए कुछ व्यक्तियों को चुना गया और उनकी जन्म कुंडलियां ज्योतिषियों को देकर इन जातकों के व्यक्तित्व, स्वभाव और व्यवहार के बारे में भविष्यवाणी करने को कहा गया। हर जातक को उसके बारे में तीन वक्तव्य दिए गए जिनमें से एक उसकी वास्तविक जन्म कुंडली पर आधारित था और अन्य दो पूरे समूह में से बेतरतीब तरीके से ले लिए गए थे यानी वे किन्हीं अन्य दो जातकों के थे। इन लोगों से कहा गया कि वे स्वयं अपने आकलन के आधार पर बताएं कि कौन-सा वक्तव्य उनके लिए सबसे सही लगता है।

इसी परीक्षण से जुड़े एक अन्य परीक्षण में कैलिफोर्निया पर्सनालिटी इंवेन्टरी (CPI) का उपयोग किया गया। इसमें सहभागी ज्योतिषियों को एक जन्मकुंडली और हर जातक के लिए तीन CPI दिए गए थे। जाहिर है कि इनमें से केवल एक CPI स्वयं जातक का था और दो अन्य बेतरतीब ढंग से चुने गए थे यानी वे किन्हीं अन्य जातकों के थे। ज्योतिषियों से यह कहा गया था कि वे हर जातक के तीनों CPI को इस आधार पर क्रम में जमाएं कि वे जातक की जन्म कुंडली से कितना मेल खाते हैं।

यदि जन्म कुंडली और व्यक्तित्व में कोई सम्बंध न होता तो भी पहले परीक्षण में लगभग एक-तिहाई वास्तविक वक्तव्यों को पहले क्रमांक पर रखा जाना चाहिए था। ज्योतिषियों का दावा था कि यदि वे सही हैं तो कम से कम आधे वास्तविक वक्तव्य क्रमांक 1 पर होने चाहिए।

इस प्रयोग को इस प्रकार किया गया कि न तो जातकों को और न ही ज्योतिषियों को यह पता था कि वे किस जन्म कुंडली को या उसके आधार पर तैयार किए गए वक्तव्य को देख रहे हैं। गोपनीयता बनाए रखने के लिए जातकों और उनकी जन्म कुंडलियों को कोड नम्बर

दिए गए थे। परिणामों का परीक्षण करने पर पता चला कि काफी कम भविष्यवाणियां सही निकलीं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भविष्यवाणियों के सही होने की संभावना केवल संयोग पर निर्भर थी।

इस पृष्ठभूमि के बाद हम हमारे स्वयं के प्रयोग की चर्चा शुरू करते हैं।

पुणे प्रयोग

परीक्षण बनाते समय हमें इस बात का एहसास था कि इसके परिणाम की व्याख्या में किसी संदेह की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। कार्लसन के प्रयोग के बारे में यह कहा जा सकता है कि किसी का व्यक्तित्व विवरण अस्पष्ट रहता है। वास्तव में कार्लसन के प्रयोग के दौरान यह पाया गया था कि कई व्यक्ति यह पहचान ही न सके कि उन्हें दिया गया विवरण स्वयं उनका है। इससे सिल्वरमन का विवाह के लिए दंपतियों की उपयुक्तता वाला तरीका अधिक अच्छा है, किन्तु भारत में असफल विवाहों की संख्या बहुत अधिक नहीं है और पर्याप्त संख्या में ऐसे दंपति ढूंढने में कठिनाई आ सकती है। अंत में हम इस बिंदु की फिर चर्चा करेंगे।

हमारे प्रयोग के लिए हमने एक भिन्न किंतु स्पष्ट मानदंड चुना। यह मानदंड था - कोई व्यक्ति बौद्धिक रूप से मेधावी है या बौद्धिक रूप से पिछड़ा हुआ है। ज्योतिषी यह दावा करते हैं कि वे किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली देखकर यह बता सकते हैं कि वह किस समूह का है। अतः हमने 200 स्कूली बच्चों को चुना। इनमें से 100 बच्चे मेंधावी थे (समूह क) जिसकी पुष्टि उनके स्कूल रिकॉर्ड के आधार पर की गई। 100 बच्चे बौद्धिक रूप से कमज़ोर थे (समूह ख) और इन्हें ऐसे बच्चों के लिए संचालित विशेष स्कूलों से चुना गया था। जन्म कुंडली बनाने के लिए इनके जन्म दिनांक आदि जानकारियां इन बच्चों के पालकों से प्राप्त की गई।

यह मैदानी काम अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति, सातारा के कार्यकर्ताओं ने किया। हममें से एक स्वयं ज्योतिषी रह चुके हैं। उनके अनुभव की बदौलत कम्प्यूटर की सहायता से इन बच्चों की जन्म कुंडलियां बनाई गईं। सभी बच्चों को कोड नंबर दिए गए ताकि केवल कोड नंबर के साथ आवश्यक प्रक्रिया करने पर ही हर बच्चे की पहचान हो सकती थी। वैसे हर बच्चा एक गुमनाम संख्या भर था। इसे डबल ब्लाइंड विधि कहते हैं क्योंकि इसमें न तो भाग लेने वाले के लिए और न प्रयोग करने वाले के लिए बच्चे की पहचान कर पाना संभव था। इस सारी जानकारी को पुणे विश्वविद्यालय के सांख्यिकी विभाग की सुरक्षित अभिरक्षा में सौंप दिया गया।

इस बीच सार्वजनिक घोषणाओं और पुणे में 12 मई 2008 को आयोजित पत्रकार वार्ता के माध्यम से ज्योतिषियों को इस प्रयोग में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। हर सहभागी (ज्योतिषी) को 200 में से 40 जन्म कुंडलियां बेतरतीब तरीके से दी गई। उन्हें निर्धारित समय में यह लिख कर भेजना था कि प्रत्येक जन्म कुंडली 'क' समूह की है या 'ख' समूह की। इसके अलावा प्रतिष्ठित ज्योतिष संस्थानों को भी आमंत्रित किया गया था। हर संस्थान को सभी 200 बच्चों की जन्म कुंडलियां भेजने का प्रावधान था।

यह सांख्यिकीय परीक्षण काफी सरल है। हमारे सामने दो परिकल्पनाएं हैं। परिकल्पना क्रमांक 1 यह है कि जन्म कुंडली के आधार पर समूह 'क' और 'ख' के बच्चों की पहचान करना केवल संयोग की बात है और यह सिक्का उछालने के समान है। जब हम सिक्का उछालते हैं तब चित या पट आने की संभाविता बराबर होती है। यानी हम काफी बार सिक्का उछालें तो चित और पट दोनों के आने की संभाविता 50 प्रतिशत होगी। परिकल्पना क्रमांक 2 यह है कि ज्योतिषीय आधार पर सही पहचान हो सकती है। ऐसा हो तो इसकी कुंडली के आधार पर सही पहचान करने की संभाविता 50 प्रतिशत से तो अधिक ही होगी।

सांख्यिकीय आधार पर देखें तो यदि 40 में से 28 या इससे अधिक बच्चों के बारे में सही पहचान हो जाए तो परिकल्पना क्रमांक 1 की तुलना में परिकल्पना क्रमांक 2 को सही माना जाएगा। जिन संस्थाओं को सभी 200 जन्म

कुंडलियां भेजी गई थी उन्हें परिकल्पना क्रमांक 2 को सही सिद्ध करने के लिए 117 या इससे अधिक बच्चों के सही समूह की पहचान करना ज़रूरी था।

ज्योतिषियों की प्रतिक्रिया

इस प्रस्ताव पर ज्योतिषियों की प्रतिक्रिया अलग-अलग थी। कुछ इस चुनौती के लिए तैयार हो गए, कुछ अन्य ने ऐसी शर्तें रखी जिनका परीक्षण से कोई सम्बंध नही था, तो कुछ ने दूसरे ज्योतिषियों से इस परीक्षण का बहिष्कार करने की अपील तक कर डाली। हम कई ज्योतिषियों से व्यक्तिगत रूप से मिले और एक परिचर्चा में भी भाग लिया जिसमें हमने परीक्षण की रूपरेखा, उसके उद्देश्य और किसी भी प्रकार की हेराफेरी को रोकने के लिए उठाए गए कदमों का विवरण दिया। हमने यह भी कहा कि यदि फलित ज्योतिष एक विज्ञान है तो ज्योतिषियों को ऐसे परीक्षणों में भाग लेना चाहिए।

कुल मिलाकर उनकी प्रतिक्रिया सकारात्मक थी, किंतु कुछ प्रमुख ज्योतिषियों ने इस परीक्षण से अपने आप को अलग कर लिया। कुल 51 ज्योतिषियों ने बच्चों की जन्म कुंडलियों की मांग की, किंतु 27 ने ही अपने जवाब भेजे। जब इनका विश्लेषण किया गया तब यह पाया गया कि सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले ज्योतिषी ने 40 में से सिर्फ 24 बच्चों की पहचान सही की थी। सफल भविष्यवाणियों का औसत 17.25 था जो कि परिकल्पना क्रमांक 1 के सही होने पर आने वाली संख्या 20 से काफी कम था। जिस संस्था को सभी 200 जन्म कुंडलियां भेजी गई थीं, उसकी सही पहचान संख्या 200 में से 102 थी जो कि पूर्व निर्धारित मानदंड 117 से काफी कम थी। इस प्रकार हमने पाया कि ज्योतिषियों के द्वारा की गई पहचान सिक्के उछाल कर केवल संयोग के आधार पर की गई पहचान से बेहतर नहीं थी।

निष्कर्ष

हमें विश्वास है कि हमने एक स्पष्ट प्रश्न पूछा था जिसमें ज्योतिषी कोई द्विअर्थीपन नहीं ढूंढ पाए थे। कई ज्योतिषियों ने अपनी सफलता को अपनी भविष्यवाणी करने की क्षमता का सूचक माना। हमें उन्हें यह समझाना पड़ा कि उन्हें जितना बड़ा सैम्पल दिया गया था उसके आधार पर अपनी भविष्यवाणी को सफल मानने के लिए उन्हें कम से कम 70 प्रतिशत सफल भविष्यवाणियां करना ज़रूरी था। इस परीक्षण से यह स्पष्ट हो गया कि फलित ज्योतिष के दावे खोखले होते हैं।

कट्टर आस्थावान शायद अपने मत में परिवर्तन न करें किंतु ज्योतिष भविष्यवाणियों के अन्य पहलुओं की जांच करने के लिए इस प्रकार के और डबल ब्लाइंड परीक्षण करना उपयोगी हो सकता है। एक महत्वपूर्ण परीक्षण सिल्वरमन द्वारा किया गया दांपत्य जीवन की सफलता/असफलता अध्ययन जैसा हो सकता है। चूंकि देश में काफी सारे विवाह जन्म कुंडलियों के आधार पर स्वीकार या अस्वीकार किए जाते हैं, इस पहलू का सांख्यिकीय परीक्षण उपयोगी रहेगा। इसके सम्बंध में जानकारी जुटाने में कठिनाई आ सकती है, किंतु ऐसा कोई प्रयास किया जाए तो वह ज़रूर उपयोगी होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 56 का हल

कु	पो	ष	ण			पा	षा	ण
ल		ट		ज	ठ	र		
		को	य	ल		भा		व
ल	क्ष	ण		ड		सी	बो	र्ग
ह			उ	म	स			मू
सु	र्खा	ब		रु		शै	वा	ल
न		हा		म	स	ला		
		दु	सा	ध्य		श्र		टा
स	ह	र			प्रा	य	द्वी	प